सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, नवम्बर-दिसम्बर 2018

यीशु मसीह दिया गया है

डरो मत...देखो आनन्द का समाचार..

'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शान्ति का अंत न होगा। वह दाऊद की राजगद्दी और उसके राज्य को उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धार्मिकता के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन इसे पूरा करगी।' (यशायाह 9:6-7)

'हमें एक पुत्र दिया जाएगा।' एक पुत्र जो अपने कांधे पर प्रभुता का भार उठायेगा। उसका नाम अद्भुत, युक्ति करनेवाला और वह अनन्तकाल का पिता है। वह शान्ति का राजकुमार है। इस तरह वह अग्रसर, आगे बढ़ेगा। सत्य और अनुग्रह उसमें सम्मिलित है।

यीशु मसीह... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

'डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।' (लूका 2:10,11)

'भय' एक ऐसा प्रबल अनुभव है जिसका हरेक चारों तरफ सामना कर रहा है। आजकल मनुष्यों की जिन्दगी में, भविष्य को लेकर भय, एक प्रमुख अभिलक्षण बन गया है।

अर्थशास्त्री पूर्वानुमान लगा सकते हैं। एक वक्त के समर्द्ध रहे देश आज गहरी कठिनाई में हैं। हर जगह, बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। वास्तविक कष्ट तो है ही और साथ-साथ काल्पनिक पीड़ाएं भी बहुत है। निजी जरूरत तो है ही और साथ-साथ कुछ ऐशो-विलास जिसको कम करना कुछ लोगों को साफ-साफ ना मंजूर है।

समाचार पत्र में शुभ समाचार का कम, एक दुखद सूची ज्यादा लगती है। विपत्तियाँ, उदासीन विध्वंस, असफल उपज, न्यूनतम पैदावार फसल और असीम राजनैतिक अवव्यवस्था .... इन दिनों, अगर एक आदमी, आनेवाले कुछ नये महासंकटों के बारे में पढ़े बिना ही समाचार पत्र को नीचे रख दे, तो यहीं एक बहुत बड़ी सुखद बात होगी।

हम दावा करते हैं कि हम सभ्य दिनों में जी रहें है। मगर हत्याकाण्डों की एक लम्बी सूची, बिना पर्याप्त न्याय विचारण किये ही संक्षिप्त, फंसी लगाना – यह सब एक हिंसक, असभ्य व्यवहार को व्यक्त कर रहे हैं। ऐसे व्यवहार से शायद ही कोई गुजरा हुआ युग हो, जो इतने विस्तृत रूप से दोषी है। आदमी के प्रति आदमी की अमानुषिकता, हमे रोने-सिसकने पर मजबूर कर देनी चाहिए। आज, लाखों ऐसे लोग है जो अपनी देश से बाहर नहीं जा सकते क्योंकि कई दिवारें और मोर्चाबंदी खड़ी की गई हैं। और वे परमेश्वर द्वारा दी हुई चुनने की आजादी से वंचित है।

ऐसी पाप भरी दुनिया में इस हलचल के बीच, इस एक उद्धारकर्ता के आने के आनन्द का समाचार, हमारे पास आता है। स्वर्गदूतों ने मध्य रात्रि, यह अद्भुत सुसमाचार चरवाहों पर प्रकट किया। 'डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हे बड़े आनन्द का सुसामाचार सुनाता हूँ ...' (लूका 2:10) हाँ, मसीह हमारे लिये बड़ा आनन्द ले आये हैं।

मुझे याद है, कि मेरा दिल कैसे बोझ के नीचे दबा था। और मैं अपनी अशुद्धता और पाप में कैसी भयानक हालत में था। उस रात जब प्रभु यीशु मुझ से मिले, पाप का भारी बोझ मेरे दिल से हट गया। वह कितना मनोहर था। ऐसा लगा मानो मैं उड़ रहा हूँ। खुशी से गा उठने से मैं अपने आप को रोक नहीं पाया। उस दिन से लेकर आज तक, आनन्द की एक

गहरी अन्तर धारा मुझ में है। सतत यात्रायें, निद्रा रहित रातें और निरन्तर बढ़ती सेवकाई, इन सब के बीच दिन-प्रतिदिन, यही आनंद मुझे एक नयी शक्ति देता है।

उद्धारकर्ता कहते हैं, 'यहोवा में आनन्दित रहना ही तुम्हारी सामर्थ्य है' (नहेमायाह 8:10) प्रभु हमारे दुखों के घने बादल हटाकर, हमारे दिल आनन्द से भरना चाहते हैं।

अच्छे मसीही होने का दावा करने वाले लोगों के बीच भी असीम शिकायतें, पक्षपात और यहाँ तक कि लोगों की बुराई करना, यह सब सुनने में आते है। यह एक चौंका देनेवाली बात है। उनके बीच दस-पन्द्रह मिनट बैठे रहे तो, अच्छे समाचारों के बजाय कान भर के बुरी खबर सुनने को मिलेंगी। मैं बताना चाहता हूँ कि मसीही छुटकारे में मूल विषय से तुम पूरी तरह से चुक गये हो। ऐसा उदासपूर्ण नजरिया क्यों? ऐसा नकारत्मक भय क्यों? क्या उद्धारकर्ता नहीं आये? या क्या वह बाकि नबियों की तरह अब भी कब्र में है? नहीं, हमारा उद्धारकर्ता अमर और पुनः जीवित मुक्तिदाता है। जवान लोग जो परमेश्वर की इच्छा में चलते है, वे इतिहास बनाते है। जकरयाह और इलीशिबा संबंधी थे। ऐसा जान पड़ता है, कि इन रिश्तेदारों में एक उच्च स्तर का विश्वास है। युहन्ना को यीशु को बप्तिसमा देना था। यूहन्ना को ऐसे ही वंश से आना था। जो सिद्धता इलीशिबा और जकरयाह अपने बुढ़ापे में प्राप्त कर पाये मरियम और यूसुफ उसी सिद्धता पर अपनी जवानी में ही पहुँच गये। परमेश्वर को ऐसे नवजवानों की तलाश है जो किसी भी कीमत पर उनकी आज्ञा मानते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों पर भरोसा कर सकते हैं।

मनश्शे का जन्म ऐसा समय पर हुआ जब राजा हिजकिय्याह का विश्वास भ्रष्ट हो रहा था। मनश्शे ने राज्य का इस हद तक विध्वंश किया कि कोई भी दुबारा उसे अपनी मूल स्थिति पर पुनः नहीं ला पाया। मगर ऊपर-उल्लिखित परिवारों ने, विश्वास में उच्च स्तर पर पहुँच पाये। यूसुफ के सपने, मरियम के शब्द कितने नबूवती थे।

मसीहियों के इतिहास में, महान घटनायें तभी घटीं, जब विश्वास एक ऊँचे स्तर पर पहुँचा था। नवजवानों को हमेशा विश्वास का प्रतिफल मिलता है। प्रार्थना करने, साथ इकट्ठा होने से, हम एक दूसरे के विश्वास में बढ़ने की मदद कर रहे है।

पाप और मृत्यु पहली स्त्री द्वारा आये। एक और स्त्री के द्वारा परमेश्वर का पुत्र इस दुनिया में आया। जीवन और शान्ति साथ लाये। मरियम के संरक्षण में यीशु पले-बढ़े। मरियम ने उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया। इलीशिबा ने भी यूहन्ना को परमेश्वर का वचन सिखाया। जो खुद वह पूर्ण रूप से पालन करती थी। यूसुफ और जकरयाह ने इन स्त्रियों के विश्वास को बल दया। इन घरों में महान समरस था। जब हम इन परिवारों के बारे में पढ़ते है तो हम किसी नयी दुनिया में पहुँच जाते हैं।

मरियम, इलीशिबा के घर में तीन महीने रही थी। घर का आध्यात्मिक माहौल पूर्ण रूप से अनुकूल ना हो तो, एक आत्मा से भरी स्त्री ऐसे घर में नहीं रह सकती। इलीशिबा का घर वैसा था। मरियम और इलीशिबा दोनों ने अपने पुत्रों के प्रति अपना कर्तव्य निभाया। यूहन्ना सच्चाई और धार्मिकता के लिए एक शहीद बना। वह जंगल में पला-बढ़ा। परमेश्वर ने इस तरह व्यवस्था की कि यूहन्ना के माता-पिता उनकी मृत्यु देखने तक जीवित नहीं रहें। मगर मरियम, अपने पुत्र की मौत और पुनरुत्थान देखने तक जीवित थी। दुनिया को हिलाने वाला, पिन्तेकुस्त का दिन, पवित्र आत्मा पाने वालों में वह भी एक थी।

परमेश्वर की भरोसेमंदी हमें याद दिलाने, क्रिसमस हर साल आता है। और कमजोर मनुष्यों के द्वारा अपनी महान योजनायें सफल करने वोले परमेश्वर के उद्धेश्य को भी याद दिलाता है। हम भी जो कमजोर है, उनकी महिमा के लिए जी सकते है। यह जान लेने में परमेश्वर हमारी

यीशु मसीह... पृष्ठ 1 से

अनुग्रह, सच्चाई को सहनीय बनाता है। कुछ आदमी जो सत्यवान है वे बहुत कठोर भी है। मगर हमारा यह परमेश्वर सत्य और अनुग्रह से भरा है। (यूहन्ना 1:14), "और वचन, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" पूरे जगत का बोझ वह उठाने वाला है। वह जिम्मेवारी उठाता है और सारी मानव जाति का पाप भी। वह पाप का दण्ड, अपने ऊपर लेता है और इस तरह आदमी को रिहा करने वाला है, ताकि पवित्र आत्मा, पवित्र करने का कार्य

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

करे। पाप ही वह रोग है जो आदमी को, यीशु मसीह में उच्च स्तरीय जीवन है, उसका आनन्द उठाने से रोकता है। क्रूस हमें अपने पापों से और पाप के स्वभाव से मुक्त करता है।

यीशु जो हमारे पापों का बोझ उठाता है और हमें पवित्र आत्मा की पाठशाला के लिए तैयार करता है, वह पूरे जगत का बोझ उठाने वाला है। जब हम यीशु के नाम को लेते हैं तो नरक के फाटक हमारे विरुद्ध प्रबल नहीं हो पायेंगे। इस नाम से की गयी हर प्रार्थना परमेश्वर के पास पहुँचेगी। वह एक सलाहकार है। जब शुद्ध हृदय और साफ विवेक के साथ उसका उच्चारण करे, तो स्वर्ग का खाजाने के लिए यह नाम 'खुल जा सिमसिम' की तरह है। उसका नाम युक्ति करने वाला - सलाहकार है। (2 इतिहास 9:23) पृथ्वी के सब राजा सुलैमान के दर्शन के अभिलाषी थे कि वे बुद्धि की बातों को सुने जो परमेश्वर ने उसके हृदय में डाली थी ।

(2 इतिहास 9:3-4) "जब शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धिमानी, उसके द्वारा निर्मित भवन, उसकी मेज पर के भोजन, उसके अधिकारियों के बैठने की व्यवस्था, उसके सेवकों की सेवा विधि व उनकी वेश-भूषा, उसके पिलाने वालों को तथा उनकी वेश-भूषा को और उस सीढ़ी को जिस से वह यहोवा के भवन को जाया करता था, देखा तो दंग रह गई।" उसके ज्ञान को देखकर वह अचम्भित थी।

यीशु एक अद्भुत युक्ति करनेवाला है जो आपको और मुझे सलाह देता है। "देखो, यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।" एक सिद्ध सलाहकार है जो आपको कभी गुमराह नहीं करता। धन्य है वह जो हर रोज उनकी सलाह के खोजी हैं। उसमें अनुग्रह और सच्चाई ने एक दूसरे का चुम्बन किया है। वह महान और शक्तिशाली परमेश्वर जिसको सुनकर इस्राएली थरथराए थे, अब वह अनुग्रह और प्रेम के रूप में अवतरित है। उसकी सलाह में कोई त्रुटि नहीं है। यीशु आपके मन को बदल कर उसे प्यार से भर देंगे। उसकी प्रभुता प्रबल होगी। और कुछ भी उसे रोक नहीं सकता। क्या आप प्रभुता का सदस्य बनना चाहते हो? तब आप आगे बढ़ोगे। अपने परमेश्वर को पहचानने वाले, सामर्थ के कार्य करेंगे। (दानिय्येल 11:32) "और वह वाचा के विरुद्ध चलने वालों की चापलूसी करते हुए उन्हें भक्तिहीन, बना देगा, परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर को पहचानते हैं, वे सामर्थ के कार्य करेंगे।" क्योंकि आपका सामर्थ अपने खुद का नहीं है बल्की शर्वशक्तिमान परमेश्वर का है, आप सामर्थ के कार्य करोगे। आप दीन, नम्र और कोमल फिर भी सामर्थशाली रहोगे। यह दिव्य स्वभाव है। आप परमेश्वर के स्वभाव में भागीदार बनोगे। उनकी सर्व शक्तित्व में भी।

- एन. दानिय्येल।

क्रिसमस की यादें!

कोरी टेन बूम (1892-1983) की जीवनी से चुनी हुई निम्नलिखित क्रिसमस की यादें है। वह हॉलैंड की एक मसीही घडीसाज़ थी। (इस कहानी के बाद का हिस्सा उस समय की बात है जब वह और उसकी बहन, नाजी बंदी शिविर में कैदी रहे। यहूदियों को छिपाने में मदद करने के कारण उनको कैद किया गया था।)

बेट्सी और मैं ... एक असली टीम की तरह काम किया करते थे। यही कुछ आठ-दस क्रिसमस की दावतों में हम वक्ता थे। जहाँ भी मौका मिले हम संदेश देते थे जैसे कि संडेस्कूल, क्लब, हस्पताल, सैनिकों के समूह और गिरिजाघरों में। चीनी पाउडर और किशमिश ऊपर डाली हुई क्रिसमस की ब्रेड, हमेशा की तरह क्रिसमस का भोज था। हर एक बच्चे के लिए एक नारंगी भी था। बाद में सब के लिए गर्म कोको का प्याला। और जब भी संभव हो किसी मसीही पुस्तिका या दीवार पर लगाने वाले बाइबल के वचन जो फूलों और पंछी के चित्रों के साथ बनी सजावट की चीजें है।

ज्यादातर हम अपने कार्यकलाप इस तरह व्यवस्थित करते थेः पहला भोज में बेट्सी लूका 2 से क्रिसमस की कहानी बताती और बाद में मैं एक क्रिसमस की कहानी। और दूसरे भोज में हम इसका उलटा, करते – बेट्सी एक कहानी और मैं पहले क्रिसमस की कहानी।

क्रिसमस के दिनों में घड़ीसाज का व्यापार, बहुत व्यस्त चलता था। मुझे याद है दिन भर का काम के बाद हम बहुत थका हुए, भोज में जाते थे। मैं गिनती करती थीः 'आज चार, पाँच और शाम के बाद क्रिसमस खतम।'

मैं जानती थी वह गलत है और मैं ने प्रार्थना की, प्रभु यह चमत्कार करो कि मैं बिना थके हर एक भोज का आनंद उठाऊँ, भले ही वह दसवी क्यों ना हो। क्या इसका मतलब यह नहीं कि सब लोग खुश हो कि आप बैतेलहेम में जन्में? आपकी प्रणाली का साधन बनके मैं और बेट्सी भी खुशी महसूस करें।

परमेश्वर ने उस प्रार्थना का जवाब दिया। ऐसे करते करते हर एक साल, वह चमत्कार हुआ था।

अब मैं आपको मेरे जीवन में उस क्रिसमस के बारे में बताना चाहती हूँ जो सुखद और दुखद भी था। हमारे 'बीजी' में (हारलेम में कोरी टेन बूम का घर) क्रिसमस की एक दावत थी।

पिता और माँ-जान्स, दोनों से हमको स्पष्ट किया था कि क्रिसमस सब के लिए है। मेरे लिए है। यीशु मेरे लिए आये। यीशु मेरा मित्र और उद्धारकर्ता है।

सन 1944 का क्रिसमस था।

बेट्सी का देहान्त हो गया था। रेवन्सब्रक में, मैं हस्पताल के बैरकों में थी। मेरे दिल में और चारों तरफ भी अंधकार फैला हुआ था।

बैरकों के बीच सड़क पर एक क्रिसमस का वृक्ष सजा है। क्यों, मुझे पता नहीं। मेरी जिन्दगी में मैंने ऐसे उदासीन वृक्ष को कभी नहीं देखा। यकीनन उनका उद्देश्य धर्म तिरस्कार और निंदा ही है कि उन क्रिसमस के पेड़ों के नीचे कैदियों के शव फेंक दिये गये।

अपने इर्दगिर्द लोगों से मैं ने क्रिसमस के बारे में बात करने की कोशिश की। मगर मैंने जो कहा वह सुनकर उन्होंने मेरा मजाक उडाया। अंततः मैं चुप हो गयी। आधी रात का समय था और अचानक एक बच्ची को रोते हुए सुना, 'माँ! ऑली के पास आओ, ऑली बहुत अकेली महसूस कर रही है।' मैं उसके पास गयी। वह बच्ची इतनी छोटी तो नहीं मगर नादान है।

"ऑली! माँ तो नहीं आ पायेगी, मगर तुम जानती हो कौन तुम्हारे पास आना चाहता है? वह यीशु है।"

मेरे बिस्तर से कुछ ही दूरी पर, खिड़की के बगल में स्थित बिस्तर पर वह लड़की लेटी हुई थी। भोजन की कमी के कारण वह दुबली-पतली तो है मगर उसका चेहरा खूबसूरत, सुन्दर आँखे और लहराते उसके बाल थे। उसकी माँ को पुकारते सुनना दिल को छू जाने वाला था। ऑली के पीठ पर कुछ शल्य चिकित्सा की गई और गर्दन को टॉयलेट पेपर से पट्टी बाँधा गया था।

उस रात, उस बेचारी बच्ची को मैं ने यीशु के बारे में बताया! एक नन्हा यीशु बनकर वह कैसे इस दुनिया में आये। हमारे पापों से हमें बचाने के लिए वह कैसे इस दुनिया में आये।

प्रभु यीशु ऑली से प्यार करते हैं और क्रूस पर उसके दण्ड को उठाया। अब ऑली स्वर्ग जा सकती है, यीशु वहाँ है। ऑली के लिए एक छोटा सा घर वह तैयार कर रहे हैं। बाद में मैं ने उस लड़की से पूछा कि जो कुछ भी मैं ने उससे कहा, उस में कितना उसे याद है।

'वह छोटा सा घर कैसा है?' मैं ने उससे पूछा। 'वह बहुत सुन्दर है। रेवन्संब्रक की तरह, वहाँ बुरे लोग नहीं है – वहाँ सिर्फ अच्छे लोग और स्वर्ग दूत है।' और ऑली वहाँ यीशु को देखेगी।

बच्ची ने फिर कहा, 'मैं यीशु से मांगूंगी कि जब मुझे दर्द होता है तो वह मुझे बहादुर बनाये।' ऑली को स्वर्ग का रास्ता दिखाने के लिए यीशु ने जो दर्द सहा, उसके बारे में सोचती हूँ। तब ऑली ने हाथ जोड़ा और हम दोनों ने मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

तब मुझे पता चला कि सन 1944 – रेवन्संब्रक में मुझे क्यों वह क्रिसमस मनना पड़ा।

– कोरी टेन बूम कृत 'कोरीस क्रिसमस मेमोरीसा' से चुनीहुई।

क्रिसमस का मसीह

लूका (2:16-18) 'वे शीघ्र जाकर मरियम और यूसुफ के पास पहुंचे और उन्होंने उस बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पाया। यह देख कर उन्होंने वह बात प्रकट कर दी जो इस बच्चे संबंध में उनसे कही गई थी। और सब लोगों ने उन बातों को सुनकर जो चरवाहों ने उनसे कहीं, आश्चर्य किया।'

इन गड़रियों को अपनी भेड़ों के झुण्ड को आधी रात में अकेले छोड़ना पड़ा। यह झुण्ड उनकी सबसे मूल्यवान धरोहर थी। झुण्ड की देखभाल ज़रूरी थी। लेकिन इन लोगों ने मसीह को खोजना अधिक ज़रूरी समझा। उनका एक ही लक्ष्य था।

आजकल लोग भावुक और अस्थिर हैं। उनका जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। यदि आपका कोई लक्ष्य है, यदि आपके जीवन में स्वर्गीय उद्देश्य है, तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके साथ केवल एक, दो या तीन लोग सहायता के लिए हैं। आपको परमेश्वर की ओर से मिले उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक बड़ी मंडली की आवश्यकता नहीं है। सच तो यह है, जितनी बड़ी मंडली, उतनी ही अधिक गड़बड़ी, झगड़ा और फूट वहाँ देखी जाती है।

इन गड़रियों के पास एक उद्देश्य था और आधी रात में ही उसे पूरा करना था। गड़रियों को उसी समय उठकर इस दिव्य कार्य को पूरा करना था जो था, 'मसीह की खोज'।

जब स्वर्गदूत चले गए तो गडरियों ने क्या कहा? 'आओ, सुबह तक इंतजार करते हैं। हमें अपने झुण्ड की देखभाल करनी है।' यदि आप ऐसा स्वभाव रखेंगे, तब आपके सारे जीवन में कोई काम नहीं होगा। मैं ने कभी कल पर भरोसा नहीं किया, मैं ने आज मिले मौके को आज उपयोग करना सीखा है। बाइबल 'आज' शब्द से भरा है। मन फिराने के विषय को लीजिए। यदि हम अपने मन फिराव को टाल देंगे, यदि परमेश्वर द्वारा हमसे अपेक्षित आज्ञापालन को टाल देंगे, और हम अपने सारे जीवन को बरबाद कर चुके होंगे। आज का दिन परमेश्वर द्वारा दिये गए मौके का दिन है। क्रूस के सामने जाओ, अपने स्वभाव को क्रूस पर रख कर कहो, 'प्रभु, यह अभी होना चाहिए।'

जब मैंने अपना जीवन प्रभु

सत्य की परख!

पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)

यीशु को समर्पित किया, वह समपूर्ण समर्पण था। यदि खेलकूद मार्ग में आड़े आये तो वे हटा दिये गए। यदि लड़कियाँ मार्ग में आड़े आयी , वे हटा दी गईं। यदि कोई और बात मेरे और प्रभु के वार्तालाप के बीच में आई, तो मैंने उन्हें एक दम अपने जीवन से अलग कर दिया। कुछ भी मुझे मेरे उद्देश्य से भटका नहीं सका। मेरा लक्ष्य था 'यीशु का सादा शिष्य बनना' कुछ भी मुझे भटका नहीं सका।

लेकिन आजकल मसीहियों में कोई तकाजे की भावना नहीं है। उनके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। वे सोचते हैं कि वे काम को और मौकों को ऐसे ही टाल सकते हैं, देरी कर सकते हैं, या कल पर छोड़ सकते हैं, जब तक कि जिन्दगी बरबाद हो चुकी होगी।

यदि अनन्तकाल महत्वपूर्ण है तो हमें दिव्य प्रकाशन का एक दम आज्ञापालन करना चाहिए, जो हमें अनन्त परमेश्वर ने दिया है, लूका (2:14) 'और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, 'आओ हम सीधे बैतलहम जाकर इस बात को जो हुई है और जिसे प्रभु ने हम पर प्रकट किया है, देखें।' क्या गडरियों ने स्वर्गदूतों द्वारा पाए दर्शन पर यह कहते हुए संदेह किया, 'क्या हम सपना तो नहीं देख रहे थे?', नहीं। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसके अनुसार कदम उठाया। बाइबल हमें यह सिखाता है कि, 'अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया और वह उसके लिए धार्मिकता गिना गाया।' उसने इस भरोसे के अनुसार कदम उठाया। जब परमेश्वर ने अब्राहम को कोई कदम उठाने को कहा तो उसने विश्वास के साथ कदम उठाया। कृपया याद रखिए कि परमेश्वर से प्रकाशन का पालन करने के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

तो परमेश्वर से हमने क्या प्रकाशन पाया है? हमारे सामने परमेश्वर का वचन है, यह कह रहा है, 'सारे संसार में जाओ और सभी प्राणियों को सुसमाचार दो।' परमेश्वर का वचन सादा व स्पष्ट है – क्या हम उसका पालन कर रहे हैं? वह कहते हैं, 'तुम चुनी हुई पीढ़ी हो, एक राजकीय याजक, एक खास लोग' एक याजक हो, वक्ता, ऐसे जो प्रार्थना कर सकें, ऐसा व्यक्ति जो अपने देश के लिए परमेश्वर के सामने रोये। क्या तुमने इसके लिए कदम उठाया है?

आइए, उन गडरियों की सादगी से हम कुछ सीखें, 'प्रभु ने हम पर यह प्रकट किया है, आओ इस उद्धारकर्ता को देखें। आओ अब चलें।' हम लोगों को, जिन्हें बौद्धिक माना जाता है, हम सोचते हैं काम को पूरा न करना, उच्च स्तर की बौद्धिकता का भाग है। हम उस सादगी को खो बैठे हैं। हम घमंडी बन गए हैं। यह हमारा घमंड है जो हमें अलग कर और अधिक आत्मानिर्भर बना देता है। हम मसीह के शिष्य दिखने की बजाय बाकी सब कुछ दिखना चाहते हैं। यदि आप इस घमंड का इलाज नहीं करेंगे तो अपने जीवन में, परमेश्वर द्वारा दिये गये उद्देश्य को पूरी नहीं कर पाएंगे। गडरियों को देखो, लूका (2:16-18) 'वे शीघ्र जाकर मरियम और यूसुफ के पास पहुंचे और उन्होंने उस बच्चे को चरनी में लेटा हुआ पाया। यह देख कर उन्होंने वह बात प्रकट कर दी जो इस बच्चे के सम्बन्ध में उनसे कही गई थी। और सब लोगों ने उन बातों को सुनकर जो चरवाहों ने उनसे कहीं, आश्चर्य किया।' क्या तुम्हारे अन्दर मसीह को देखकर ऐसा अश्चर्य होता है? बहुत से लोगों ने परमेश्वर के वचन से अद्भुतपन को दूर कर उसे आहों, बड़बड़ाने, अविश्वास और निठुल्लेपन से भर दिया है।

आइए, इस बात पर ध्यान दें कि हम किसी दूसरे ही मसीह को न दर्शाएँ। जब गडरियों ने प्रभु को देखा, वे सुसमाचार के विस्मय से भर गए थे। आज तक भी प्रभु ने सुसमाचार को बेस्वाद प्रकाशन बनाने को नहीं छोड़ा है। जब आप यीशु को लोगों में बाँटते हो, तो वह स्वयं को लोगों पर प्रकट करते हैं। यीशु लोगों से बात करते हैं। आज भी वह लोगों के जीवन में काम कर रहे हैं। जब आप दूसरों से मसीह को बांटेंगे, मसीह के प्रकाशन का विस्मय आप देखेंगे। आधुनिक, शिक्षित दिमाग, अपने संदेह और अविश्वास द्वारा, सुसमाचार के विस्मय को कम करने की कोशिश करता है। यदि कोई आदमी चाँद पर जाता है, तो हम विस्मय करते हैं लेकिन यीशु मसीह हमारे लिए अब बासी हो गया है।

समय आ गया है कि हम अपने को नम्र करें और अपनी चाल को सुधारें। यदि सृष्टिकर्ता ने मेरे और आपके लिए अपने को नम्र किया है, यीशु को एक सेवक के रूप में भेजा, हमें भी अपने को नम्र करना चाहिए। मेरे प्रिय लोगों, इस क्रिसमस के समय में आइए सादे और सच्चे लोग बनें। यह संसार क्रिसमस के मसीह से दूर हो गया है। उसकी चरनी की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहा। लोग उसके अद्भभुत आगमन को किंवदंती या पौराणिक कथा समझते हैं। लोग सोचते हैं कि क्रिसमस तो खाने पीने और नाच गाने का समय है 'किसलिए?' 'क्योंकि मैं स्वयं से प्रेम करता हूँ, मैं उद्धारकर्ता के जन्मदिवस की पार्टी पर उसे खुश नहीं करना चाहता।' सारे संसार में यीशु के जन्मदिवस की पार्टी के समान कोई पार्टी नहीं होती।

यदि आप किसी जन्मदिवस समारोह में जाएँ, जिसका जन्मदिन है, आप उसे शुभकामनाएँ देते हैं। परन्तु बहुतेरे मसीह के जन्मदिवस समारोह में मसीह को नहीं चाहते। ओह! कैसी दुर्दशा। सत्य का क्रिसमस से पूरा अलगाव।

यीशु की आराधना – यही क्रिसमस है। यीशु के मन को खुशी पहुँचाना। यह पूर्णरूप से संभव है, आओ यीशु के मन को खुशी पहुँचाएं।

- जोशुआ दानिएल।

सेबों की फसल

अपने वैवाहिक जीवन के पहले बीस साल हमनें चार अलग-अलग घरों से बिताए। वे काफी सुन्दर घर थे, लेकिन एक में भी बगीचे का स्थान नहीं था। अपने पाँचवें घर में आने का हमें बहुत आनंद हुआ क्योंकि इसमें ने केवल बग़ीचा बल्कि तीन फलदायक सेब के पेड़ भी थे।

पहले पतझड़ के मौसम ने सेब की बड़ी फसल होते देखी और हमने यह

ठान लिया था कि जितना संभव हो उतने सेब संभाल कर रखेंगे। उन्हें चुनने के बाद सावधानी से, एक एक कर अख़बार के कागजों में लपेट कर लकड़ी की तश्तरी में, एक के ऊपर एक गैराज़ में रख दिया, क्योंकि हम उन्हें क्रिसमस के त्यौहार के समय उपयोग करना चाहते थे। इन सेबों की सोचते हुए हमें सर्दी के समय का इंतजार था। लेकिन साथ ही यह आदमी तथा औरतों की आत्माओं का ध्यान रखने के लिए भी उचित सलाह है। कितनी बार कलीसिया में हम बहुत आनंदित होते हैं, जब लोग मसीह पर अपने विश्वास को लाने की घोषणा करते हैं, लेकिन थोड़े ही समय में यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका उद्धार नहीं हुआ है और वे कलीसिया आना बंद कर देते हैं। यह परमेश्वर का अत्यंत निरादर है। साथ ही यह हम मसीही लोगों के लिए निराशा और कुंठा की बात है और साथ ही वह लोग जिन्होंने अपना विश्वास लगाया था, अब सुसमाचार के विरुद्ध बहुत कठोर बन जाते हैं। वह कहते हैं, 'मैंने उद्धार पाया लेकिन उसका कोई असर नहीं है।'

यह एक सच्ची समस्या है। आधुनिक 'निमंत्रण' प्रणाली इसको और अधिक बिगाड़ देती है, लेकिन ऐसी कलीसियाओं में जो इस प्रणाली का उपयोग नहीं करते हैं, वहाँ भी ऐसा पाया जाता है, ऐसा क्यों होता है?

अधिकतर, जैसे सेबों के साथ, अज्ञानता के साथ हमारा उत्साह ही इसका कारण है। हम आत्माओं का उद्धार देखने कि लिए इतने तत्पर होते हैं कि बाइबल के मूल सिद्धांतों को भूल बैठते हैं। इसका यह असर होता है कि हम लोगों को पूरी तरह से तैयार होने से पहले ही निर्णय दिलवा देते हैं। हम यह कैसे जाने कि आत्मिक फल चुनने का सही समय कब है?

सर्वप्रथम, हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि सच्चा परिवर्तन आदमी के निर्णय पर नहीं बल्कि पवित्र आत्म के कार्य पर निर्भर करता है। इस दिव्य कार्य के चिन्ह हमें नज़र आएंगे। हम प्रेरितों के कार्य (11:23) में पढ़ते हैं कि बारनबास ने वहां पर परमेश्वर के अनुग्रह के सबूत को देखा। मुख्य सबूत है, पाप का बोध, जो पश्चात्ताप की और लेकर जाता है। इसके बिना उद्धार संभव नहीं है। पाप के बोध का जोर, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन इसका होना बहुत ज़रूरी है।

पिछली पीढ़ियों में मसीही लोग आत्मा के जागने और उद्धार में अन्तर रखते थे। 'जागने' से उनका अर्थ था कि पवित्र आत्मा ने उनके अन्दर कार्य आरंभ कर दिया है। पाप का बोध होना आरंभ हो जाता है और माफी पाने की चाह उनके अन्दर पैदा होती है। लेकिन यह अब भी परिवर्तन नहीं है। शायद आज भी हमें इस अन्तर को रखना चाहिए और कार्य में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, जो पवित्र आत्मा ने आरंभ किया है।

इसका यह अर्थ नहीं कि हम खाली बैठ जाए और कुछ न करें। यदि आप देखें कि परमेश्वर किसी व्यक्ति की आत्मा को जगा रहें हैं, तो उनके लिए प्रार्थना कीजिए, उनकी सहायता कीजिए और सलाह दीजिए, लेकिन पवित्र आत्मा को अपना खास काम करने दीजिए। जब वह पक पाएंगे, वह आसानी से तोड़े जाएंगे और कोई जोर देने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

पवित्र आत्मा द्वारा तोड़ी गई फसल में कोई सड़ने वाले सेब नहीं मिलेंगे।

- चुनी हुई।

फिलिप्पियों 2
मसीह की दीनता का अनुकरण

1 अतः यदि तुम्हें मसीह में कुछ प्रोत्साहन, प्रेम की सान्त्वना, आत्मा की सहभागिता, प्रीति और सहानुभूति है,

2 तो मेरा आनन्द पूर्ण करने के लिए एक ही मन, एक ही प्रेम, एक ही भावना और एक ही दृष्टिकोण रखो।

3 स्वार्थ और मिथ्याभिमान से कोई काम न करो, परन्तु नम्रतापूर्वक अपनी अपेक्षा दूसरों को उत्तम समझो।

4 तुम में से प्रत्येक अपना ही नहीं, परन्तु दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

5 अपने में वही स्वभाव रखो जो मसीह यीशु में था,

6 जिसने परमेशवर के *स्वरूप में होते हुए भी परमेशवर के समान होने को अपने अधिकार में रखने की वस्तु न समझा।

7 उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया कि दास का *स्वरूप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया।

8 इस प्रकार मनुष्य के रूप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

9 इस कारण परमेशवर ने उसको अति महान् भी किया और उसको वह नाम प्रदान किया जो सब नामों में श्रेज्ठ है,

10 कि यीशु के नाम पर प्रत्येक घुटना टिके, चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे,

11 और परमेशवर पिता की महिमा के लिए प्रत्येक जीभ अंगीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु है।